संगीत भूषण (प्रथम खण्ड)

Sangeet Bhusan Part-1(First Year)

गायन (VOCAL)

ख्याल एवं ध्रुपद

पूर्णांक: १५० शास्त्र- ५०, क्रियात्मक-१००

शास्त्र (Theory)

(१) **परिभाषा**-- संगीत, भारतीय संगीत की दो मुख्य पद्धति, नाद श्रुति, स्वर, सप्तक , थाट लय, ताल, जाति, सम, ताली, खाली, आबर्तन मात्रा, अंलकार और राग।

(२) शुद्ध तथा विकृत स्वरों का ज्ञान।

(३) इस वर्ष के निर्धारित राग समूहों का परिचय जानना आवश्यक है।

(४) भातखंडे स्वर लिपि पद्धति का ज्ञान।

(५) गीतों के प्रकार- सरगम गीत तथा लक्षण गीत।

(६) इस वर्ष के लिये निर्धारित तालों के ठेके ताली, खाली तथा विभाग सहित विलंबित और दुगुन में लिखने का अभ्यास।

(७) दिये गये स्वर समूहों को देखकर राग पहचानना।

क्रियात्मक (Practical)

(१) शुद्ध तथा विकृत स्वरों में सरल अलंकार गाने का अभ्यास।

(२) निम्नलिखित राग समूहों में छोटा ख्याल (ध्रुपद गायन के परीक्षार्थियों को ठाह तथा दुगुन लयकारी साहित ध्रुपद गायन) किन्ही दो रागों में साधारण आलाप गाने का अभ्यास- निर्धारित राग- बिलावल अल्हैया बिलावल) यमन कल्याण, भूपाली, खमाज, भैरव, बिहाग तथा आसावरी।

(३) ध्रुपद गायन के परीक्षार्थियों को सूलताल में निबद्ध रचना गीत और एक सरगम गीत जानना आवश्यक है।

(४) इस वर्ष के लिये निर्धारित राग समूह में से किसी एक राग का लक्षण गीत और एक सरगम गीत जानना आवश्यक है।

(५) स्वर विस्तार सुनकर राग पहचानने की क्षमता।

(६) निम्नलिखित ताल समूहों को ताली खाली सहित ठाह तथा दुगुन लय में बोलने का अभ्यास- ख्याल गायन के लिए-दादरा, कहरवा, त्रिताल तथा झपताल। ध्रुपद गायन के लिये- दादरा, कहरवा, चौताल तथा सूलताल।

टिप्पणी-- पूर्व वर्षों का पाठयक्रम संयुक्त रहेगा।

संगीत भूषण (द्वितीय खण्ड)

Sangeet Bhusan Part-II (Second Year)

गायन (VOCAL)

ख्याल एवं ध्रुपद

पूर्णांक: १५० शास्त्र- ५०, क्रियात्मक-१००

शास्त्र (Theory)

(१) निम्नलिखित शब्दों का परिभाषिक ज्ञान-
नाद तथा नाद की विशेषता, श्रुति, थाटों के प्रकार, वर्ण (स्थायी आरोही, अवरोही व संचारी) वादी, सम्वादी अनुवादी विवादी, पूर्वराग, उतरराग, ग्रह,अंश, न्यास, राग, अलाप, गमक, तान, मींड़, वक्रस्वर, आश्रयराग

(२) निम्नलिखित के पारस्परिक विभेदों का अध्ययन-
थाट-राग, श्रुति-स्वर
तान-आलाप, नाद-श्रुति।

(३) विष्णु दिगम्बर स्वर लिपि पद्वति का ज्ञान।

(४) गीतों के प्रकार- ध्रुपद और ख्याल।

(५) इस वर्ष के लिए निर्धारित राग समूहों का पूर्ण परिचय।

(६) दिये गये स्वर समूहों को देखकर रागों को पहचानना एवं सम प्रकृति रागों के मध्य समानता तथा विभिन्नता का ज्ञान।

(७) आधुनिक मतानुसार २२ श्रुतियों को सात स्वरों में विभाजित की विधि एवं नियम।

(८) भातखंडे पद्वति में तान, आलाप सहित ख्याल (ध्रुपद गायन परिक्षार्थियों के लिए विभिन्न लयकारियां आलाप आदि) तथा पाठयक्रम में निधार्रित विभिन्न गीत प्रकारों को स्वर लिपि में लिखनें का अभ्यास।

(९) इस वर्ष के लिये निर्धारित ताल समूहों को ठाह, दुगुन तथा

चौगुन में सम, ताली, खाली में दिखाने तथा ताल लिपिबद्व करने का अभ्यास।

(१०) जीवनी तथा संगीत क्षेत्र में योगदान-
तानसेन तथा पं भातखंडे।

क्रियात्मक (Practical)

(१) शुद्ध तथा विकृत स्वरों में कठिन अलंकार गाने का अभ्यास।

(२) निम्नलिखित राग समूहों में अलाप सहित छोटा ख्याल, ध्रुपद गायन के परीक्षार्थियों के लिये ठाह, दुगुन तथा चौगुन लयकारी के साथ ध्रुपद गाना जानना आवश्यक है।
निर्धारित राग- भैरवी, काफी, देस, वृन्दावनी सारंग, दुर्गा, बागेश्री, भीमपलासी तथा जौनपुरी।

(३) पाठयक्रम में से किन्ही दो रागों में एकताल में बड़ा ख्याल तथा (ध्रुपद के परीक्षार्थियों के लिए ध्रुपद चारताल या सूलताल) में निबद्ध होना चाहिए।

(४) प्रथम तथा द्वितीय वर्ष के लिये निर्धारित रागों में से किसी भी एक राग में एक ध्रुपद (विलंबित तथा दुगुन लयकारी में) गानें की क्षमता।
-धमार विलंबित तथा दुगुन लयकारी सहित गानें की क्षमता।

(५) आलाप सुनकर राग पहचानना।

(६) निम्नलिखित ताल समूहों का ठेके के बोल सहित दुगुन तथा चौगुन लय में हाथ पर ताली, खाली दिखानें का अभ्यास।
-त्रिताल, एकताल, चारताल, तीवरा और सूलताल।

(७) तानपूरा अथवा हारमोनियम पर राग के उपयोगी स्वर दबाकर गाने का अभ्यास।

टिप्पणी-पूर्व वर्षो का पाठयक्रम संयुक्त रहेगा।

संगीत भूषण पूर्ण

Sangeet Bhushan Final (3rd Year)

गायन (VOCAL)

ख्याल एवं ध्रुपद

पूर्णांक: १०० शास्त्र- ५०, क्रियात्मक-१००

शास्त्र (Theory)

(१) शुद्ध तथा विकृत स्वर समूहों द्वारा ७२ थाटों की उत्पति का विवरण तथा व्यंकट मुखी द्वारा एक थाट से ४८४ रागों के उत्पन्न होने का विवरण।

(२) पूर्व राग, उत्तर राग, संधि प्रकाश राग, आविर्भाव-तिरोभाव, अल्पत्व बहुत्व, तानों के प्रकार, गमकों के प्रकारों के विषय में विस्तृत विवरण।

(३) गायक के गुण तथा दोष।

(४) तानपूरा तथा तबले का इतिहास एवं उनको स्वर में मिलाने की विधि।

(५) गीतों के प्रकार-धमार तथा तराना।

(६) पाठयक्रम में निर्धारित राग समूहों का पूर्ण तथा तुलनात्मक अध्ययन।

(७) ध्रुपद तथा धमार की स्वरलिपि ठाह, दुगुन, तिगुन तथा चौगुन लयकारी में लिखनें की क्षमता।

(८) संगीत से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर निबंध-
(क) रेडियो तथा संगीत
(ख) शास्त्रीय संगीत तथा सुगम संगीत
(ग) मानव जीवन में संगीत का महत्व
(घ) संगीत में ताल तथा लय का महत्व

(९) लिखित स्वर समूहों को देखकर रागों की पहचान।

(१०) पाठयक्रम में निर्धारित ताल समूहों को ठाह, दुगुन तिगुन

तथा चौगुन में लिखनें की क्षमता।

(९) निम्नलिखित संगीतकारों का जीवन परिचय व योगदान- स्वामी हरिदास, विष्णु दिगम्बर पलुस्कर, अमीर खुसरो।

(१०) भारतीय संगीत का इतिहास।

क्रियात्मक (Practical)

(१) पाठयक्रम में निर्धारित समस्त रागों में छोटे ख्याल (ध्रुपद गायन के परीक्षार्थियों के लिए आलाप के विभिन्न प्रकार सहित विलंबित, दुगुन, तिगुन तथा चौगुन लयकारी सहित ध्रुपद जानना आवश्यक है-)
निर्धारित राग- तिलंग, मालकौंस, पूर्वी, कालिंगड़ा, जयजयवन्ती, केदार, कामोद, हमीर, देशकार पीलू, पटदीप ।

(२) ऊपर दिये गये रागों में किन्ही चार रागों में विलंबित ख्याल झूमरा, त्रिताल तथा एकताल में निबद्व होने चाहिए।

(३) इस वर्ष के लिये निर्धारित राग में से किसी भी एक राग में एक ध्रुपद तथा एक धमार जानना आवश्यक है। (ध्रुपद धमार ठाह, दुगुन, तिगुन तथा चौगुन में होना चाहिए।)

(४) -ध्रुपद गायन परीक्षार्थियों को ठाह, दुगुन, तिगुन तथा चौगुन लयकारी के साथ दो धमार एवं एक तराना जानना आवश्यक है।

(५) रागों में समानता विभिन्नता गाकर प्रदर्शन करने का अभ्यास।

(६) आलाप सुनकर रागों की पहचान।

(७) निम्नलिखित तालों के ठेके को ताली खाली ठाह दुगुन, तिगुन तथा चौगुन लयकारी में बोलने का अभ्यास- तिलवाड़ा, झूमरा और धमार।

(८) तानपुरा के साथ गाने का अभ्यास अनिवार्य है।

टिप्पणी- पूर्व वर्षों का पाठयक्रम संयुक्त रहेगा।